Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अगस्त/2022 ई०

MONTHLY **ANSARULLAH** QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

AUGUST-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

12-06-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह काक्कनाड (केरला) द्वारा एर्नाकुलम ज़िला जैल में 300 क़ैदियों को मिठाई वितरण करने के बाद एक ग्रुप फ़ोटो ।

08-5-2022 को करुनागापल्ली (ज़िला कोल्लम) में आयोजित मज्लिसे अमिला रिफ़्रेशर कोर्स बाबत ज़िला कोल्लम, अल्लेप्पी, तिरुवनन्तपुरम (केरला) स्टेज का दृश्य ।

26-06-2022 को मिशन हाउस पूँछ में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला पूँछ (जम्मू & कश्मीर) के स्टेज पर श्री मुहम्मद आरिफ़ रब्बानी साहब क़ाइद तालीम मर्कज़ी नुमाइंदा एवं दीगर ओहदेदारान विराजमान हैं।

12-6-2022 को आयोजित रिफ़्रेशर कोर्स बाबत ज़िला मोगा, फ़िरोज़पुर (पंजाब) में श्री अब्दुल मोमिन राशिद साहब नायब सदर अव्वल, मुहम्मद यूसुफ़ अनवर साहब क़ाइद वक़्फ़े जदीद एवं हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

श्री डॉक्टर अब्दुल माजिद साहब क़ाइद तजनीद भारत की अध्यक्षता में 3-7-2022 को नगला घनु में आयोजित तरबियती कैंप में भाषण देते हुए श्री इशराक अली खान साहब अमीर ज़िला एटा, श्री अहमद दराज़ खान साहब ज़ईम, सदर भी विराजमान हैं ।

श्री फ़िरोज़ आलम साहब नाज़िम मज्लिस अंसारुल्लाह की अध्यक्षता में 13-06-2022 को आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के स्टेज का दृश्य, श्री मुहम्मद अली साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज भी देखे जासकते हैं ।

14-16 जून 2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह कालीकट (केरला) द्वारा आयोजित टूर से पहले अहमदिय्या मस्जिद के सामने एक ग्रुप फ़ोटो।

12-06-2022 को करुनागापल्ली में आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह (ज़िला कोल्लम, केरला) के स्टेज का एक दृश्य।

11-6-2022 को ज़िला मज्लिस अंसारुल्लाह कटक द्वारा आयोजित बुक स्टाल के आरम्भ महोत्सव का एक दृश्य ।

11,12-6-2022 को तालबरकोट (ज़िला ढेंकानाल) में आयोजित तरबियती कैंप में श्री सय्यद अनवरुद्दीन अहमद साहब नाज़िम मज्लिस अंसारुल्लाह कटक, केंद्रपाड़ा, ढेंकानाल (ओडिशा) भाषण देते हुए ।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم وعلی عبدہ المسیح الموعود

یاایھا الذین امنوا کونوا انصار اللہ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 अगस्त 2022 **Issue - 8**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - बच्चों के भविष्य पर माता पिता के आचरण का आदर्श	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन जन्नत तुल्य पारिवारिक जीवन के लिए मर्दों(अन्सार) के कर्तव्य	6
कुरआन की दृष्टि में उत्तम पारिवारिक जीवन	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ○اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا○خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ○

(सूरत अल्फ़ुरकान:आयत 75 से 77)

अनुवाद - और वे लोग जो ये कहते हैं कि हे हमारे रब्ब हमें अपने जीवन साथियों और अपनी औलाद से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे।यही वे लोग हैं जिन्हें इस कारण से कि उन्होंने धैर्य धारण किया उच्च स्थान बदला के रूप में दिए जाऐंगे और वहां उनका स्वागत किया जाएगा और सलाम पहुंचाए जाऐंगे।वे हमेशा उन (जन्नतों में रहने वाले होंगे। वे क्या ही अच्छे हैं अस्थायी ठिकाने के तौर पर भी और स्थायी ठिकाने के रूप में पर भी

दर्सुल हदीस

عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ أَنَّ نَفَرًا مِنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ بَعْضُھُمْ : لَا أَتَزَوَّجُ وَقَالَ بَعْضُھُمْ :اُصَلِّیْ وَلَا أَنَامُ وَقَالَ بَعْضُھُمْ :اَصُوْمُ وَلَا اُفْطِرُ فَبَلَغَ ذٰلِكَ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ:مَا بَالُ اَقْوَامٍ قَالُوْا کَذَا وَ کَذَا ! لٰکِنِّیْ اَصُوْمُ وَاُفْطِرُ وَاُصَلِّیْ وَاَنَامُ وَاَتَزَوَّجُ النِّسَآءَ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِیْ فَلَیْسَ مِنِّیْ ۔

(बुख़ारी किताबुन्निकाह)

अनुवाद - हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा रज़ि ने संसार से विरिक्त होने का वादा किया। किसी ने कहा मैं शादी नहींकरूँगा। किसी ने कहा मैं निरन्तर नमाज़ पढ़ता रहूँगा और सोना छोड़ दूंगा। किसी ने कहा मैं रोज़े रखता चला जाऊँगा , इफ़तार नहीं करूँगा। जब यह ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली। तो आप ने फ़रमाया। ये कैसे लोग हैं जो इस इस तरह कहते हैं ! मैं तो रोज़ा भी रखता हूँ और इफ़तार भी करता हूँ नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ और मैंने शादियां भी की हैं। अत: जो व्यक्ति मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ता है वह मुझ में से नहीं है अर्थात उस का मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

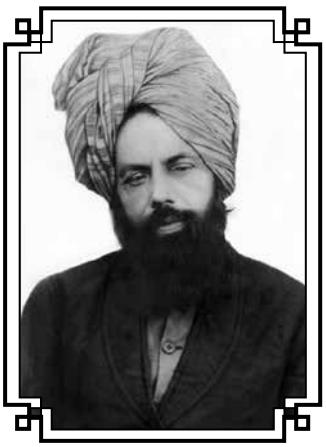

पत्नियों से पतियों का ऐसा सम्बन्ध हो जैसे दो सच्चे और हक़ीक़ी दोस्तों का होता है।

"हमारे हादी कामिल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से बेहतर वे व्यक्ति है जिसका अपने घर वालों के साथ उत्तम व्यवहार हो। बीवी के साथ जिसका उम्दा चाल चलन और व्यवहार अच्छा नहीं वह नेक कहाँ। दूसरों के साथ नेकी और भलाई तब कर सकता है जब वह अपनी पत्नी के साथ उम्दा सुलूक करता हो। जब वह अपनी बीवी के साथ उत्तम व्यवहार करता हो और उम्दा आदत रखता हो। न यह कि हर छोटी बात पर मार कुटाई करे। ऐसी घटनाएं होती हैं कि कई बार एक ग़ुस्से से भरा हुआ इन्सान बीवी से छोटी सी बात पर नाराज़ हो कर उस को मारता है और किसी नाज़ुक स्थान पर चोट लगी है और बीवी मर गई है। इस लिए उनके लिए अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ(अन्निसा 20) हाँ अगर वे व्यर्थ काम करे तो सचेत करना ज़रूरी चीज़ है। "

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 403-404 अलहकम 24 दिसम्बर 1900 ई)

"चाहिए कि पत्नियों से पतियों का ऐसा सम्बन्ध हो जैसे दो सच्चे और हक़ीक़ी दोस्तों का होता है। इन्सान के उच्च आचरण और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध की पहली गवाह तो यही औरतें होती हैं अगर उन्हीं से उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं तो फिर किस तरह मुम्किन है कि ख़ुदा तआला से सुलह हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से अच्छा है वह जो अपने घर के लिए अच्छा है।" (मलफ़ूज़ात भाग 3 अलबदर 22 मई 1903 ई)

" जो शख़्स अपनी पत्नी और इस के रिश्तेदारों से(अर्थात उस के रिश्तेदारों से भी नर्मी और उपकार के साथ व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है।"

(कश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 19)

" अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में यह दुआ सिखलाई है कि اَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ (अह्क़ाफ़ 16) कि मेरी बीवी बच्चों की इस्लाह फ़र्मा अपनी हालत की पवित्र तबदीली और दुआओं के साथ साथ अपनी औलाद और बीवी के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए। क्योंकि प्राय फ़ित्ने औलाद के कारण से इन्सान पर पड़ जाते हैं और प्राय पत्नी के कारण से। अत: उनके कारण से भी प्राय इन्सान पर बड़ी मुसीबतें आ जाया करती हैं तो उनके सुधार की तरफ़ भी पूरा ध्यान करना चाहिए और उनके लिए भी दुआएं करते रहना चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 456-457 2 मार्च 1908 ई)

सम्पादकीय

बच्चों के भविष्य पर माता पिता के आचरण का प्रभाव

क़ुरआन मजीद और हदीसों के आलोक में माता पिता जब बच्चों के भविष्य को समक्ष रखते हुए उत्तम नमूना प्रस्तुत करेंगे तो जहां बच्चों की तर्बीयत होगी वहीं घर में उत्तम घरेलु ज़िंदगी का सुन्दर परिवेश भी स्थापित होगा। वास्तव में एक नासिर जब अपनी उम्र के चालीस साल पूर्ण करके मज्लिस अन्सारुल्लाह का सदस्य बनता है तो मानो अपनी पुख़्तगी की आयु को पहुंचता है। इस आयु में इस की सोच सम्पूर्ण होती है। जीवन के ऊंच तथी नीच से परिचित होता है। शादी हो जाती है और औलाद की नेअमत प्राप्त होती है। अत: इस दृष्टि से वह अपने घर का निगरान होता है। एक नासिर की ज़िम्मेदारी सिर्फ उस की ज़ात तक सीमित नहीं बल्कि उस के घर वालों की ज़िम्मेदारी भी इस पर होती है। कई बार जब मियां बीवी में झगड़ा जुदाई का कारण बन रहा हो तो बच्चों के लिए वह अपने रिश्ते को क़ायम रखते हैं। ऐसी ही एक उदाहरण को वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन्रेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं।

"एक झगड़ा मेरे पास आया। मर्द के अत्याचार के कारण से रिश्ता टूटने लगा था। इस औरत के चार पाँच बच्चे भी थे। मैंने समझाया कुछ सुधार हुआ लेकिन फिर मर्द ने अत्याचार शुरू कर दिया। फिर औरत ने खुला का निवेदन दे दिया। आख़िर फिर दुआ और समझाने से अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और इन दोनों की सुलह हो गई और अब फ़ज्र की नमाज़ जब मस्जिद में पढ़ने आते हैं और जब मैं इन को जाते हुए देखता हूँ तो बड़ी ख़ुशी महसूस होती है कि अल्लाह तआला ने इन को अक़्ल दी और उन्होंने अपने बच्चों के लिए दुबारा अपने रिश्ते जोड़ लिए। तो औरत को और मर्द को हमेशा यह ख़्याल रखना चाहिए कि सिर्फ अपनी भावनाओं को न देखें बल्कि बच्चों की भावनाओं को भी देखें। उनका भी ध्यान रखें।

(सालाना इज्तिमा लज्ना इमा उअल्लाह यूके 4 अक्तूबर 2009 ई अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 18 दिसम्बर 2009 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"वे काम करो जो औलाद के लिए बेहतरीन नमूना और शिक्षा हो। और इस के लिए ज़रूरी है कि सबसे पहले ख़ुद अपना सुधार करो। अगर तुम उच्च स्तर के मुत्तक़ी और परहेज़गार गिने जाओगे और ख़ुदा तआला को राज़ी कर लोगे तो यक़ीन किया जाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी औलाद के साथ अच्छा मामला करेगा। "

(अलहकम 10 नवम्बर 1905 ई)

पतियों को चाहिए कि बच्चों के उज्जवल भविष्य तथा समाज में उन्हें नेक व्यक्ति बनाने के लक्ष्य को समक्ष रखते हुए (1) पत्नी को सुरक्षा उपलब्ध करें चूँकि पत्नी अपने पति से भरपूर आशा रखती है कि मेरी और मेरे बच्चों की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी मेरा पति अदा करेगा तब वह बिना चिन्ता के अपने घर को सँभालती है। (2) बीवी अपनी, अपने बच्चों और अपने माता पिता का सम्मान चाहती है। वर्ना वो थोड़ा काम करके भी ख़ुद को एक नौकर विचार करती है और उसे इज़्ज़त मिल जाए तो कठोर मेहनत के बावजूद गर्व के भावना रखती है। (3) पत्नी की हौसला अफ़ज़ाई

ज़रूरी है। यह उस की प्रकृत में है जिसे नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता। और यदि इसे नज़र अन्दाज़ किया गया तो फिर इस के भयानक परिणान निकलते हैं।

हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहु-ल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"फिर एक साधारण बात है, जिसकी ओर माता पिता को ध्यान देना होगी। वह है अपने बच्चों में अल्लाह तआला का भय पैदा करें ,उन्हें मुत्तक़ी बनाएँ, और यह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक माता पिता ख़ुद मुत्तक़ी न हों। या मुत्तक़ी बनने की कोशिश न करें। क्योंकि जब तक कर्म नहीं करेंगे मुँह की बातों का कोई असर नहीं होता। अगर बच्चा देख रहा है मेरे माँ बाप अपने पड़ोसियों के हुक़ूक़ अदा नहीं कर रहे हैं ,अपने बहन भाईयों के हुक़ूक़ छीन रहे हैं। थोड़ी थोड़ी बात पर मियां, बीवी में, माँ बाप में मतभेद और झगड़े शुरू हो रहे हैं। तो फिर बच्चों की तर्बीयत और उन में तक़्वा पैदा करना बहुत मुश्किल हो जाऐगा। इस लिए बच्चों की तर्बीयत के लिए हमें भी अपने सुधार की बहुत ज़रूरत है।

(ख़ुत्बा जुम्अ 27जून 2003 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इस हिदायत पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

जन्नत तुल्य पारिवारिक ज़िन्दगी के लिए मर्दों(अंसार) के कर्तव्य

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्राहिल-अज़ीज़ ने मज्लिस आमिला अन्सारुल्लाह अल्लाह भारत से 11 अप्रैल 2021 ई को आयोजित वर्चोल मुलाक़ात में हिदायत फ़रमाई थी कि

"अंसार को ध्यान दिलाएँ कि बीवियों से उत्तम व्यहार से पेश आएं।"

अल्लाह तआला फ़रमाता है। عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ (अन्निसा 20) अर्थात और उनसे नेक सुलूक के साथ ज़िन्दगी व्यतीत करो। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (मर्दों) के लिए फ़रमाते हैं।

"दिल दुखाना बड़ा गुनाह है और लड़कियों के सम्बन्ध बहुत नाज़ुक होते हैं जब माता पिता उनको अपने से जुदा और दूसरे के हवाले करते हैं तो ख़्याल करो कि क्या उम्मीदें उनके दिलों में होती हैं और जिनका अंदाज़ा इन्सान عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ के हुक्म से ही कर सकता है।"

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भाग 2 पृष्ठ 216)

जन्नत तुल्य ज़िन्दगी के लिए कुछ प्रमुख बिन्दु नीचे वर्णन किए जाते हैं

इस्लाम ने घर वालों के खर्चों की ज़िम्मेदारी मर्द पर डाली है। इस लिए मर्द (नासिर)को अनिवार्य है कि वह मेहनत से काम करे और बीवी बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करे। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"पवित्रता यह नहीं है कि दुनियावी हुक़ूक़ बीवी बच्चों के जो अल्लाह तआला ने दिए हैं उनको इन्सान भूल जाए या काम काज करना छोड़ दे। दुनियावी काम काज भी साथ हों लेकिन सिर्फ लक्ष्य यह न हो। बल्कि हर एक के हुक़ूक़ हैं वे अदा किए जाएं।"

(ख़ुतबा जुम्अ: 7 मई 2004 ई)

एक तलाक़ के मामला में कर्नाटक की हाई-कोर्ट ने फ़ैसला सुनाया है कि बीवी को ATM की तरह इस्तिमाल करना मानसिक कष्ट पहुंचाने के समान है।

(हिन्द समाचार 20 जुलाई 2022 पृष्ठ 1)

इस्लाम ने 15 सौ वर्ष पहले यह शिक्षा दी है कि मर्द का लक्ष्य बीवी की जायदाद न हो। सय्यदना हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं।

"औरत की आज़ादी का हर हक़ क़ायम करने के लिए इस्लाम औरत को एक ऐसा हक़ दिलवाता है जो कई अधिकारों का सार है। يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا (अन्नसि 20) कि हे वो लोगो ! जो ईमान लाए हो तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम ज़बरदस्ती करते हुए औरतों का विरसा लो ...तो यह है एक हक़ औरत का। जैसे एक पति अपनी पत्नि पर

अत्याचार करता है..और छोड़ता भी इस लिए नहीं कि इस की जायदाद से लाभ उठाता रहे।"

(जलसा सालाना यू के ख़िताब मसतूरात 26 जुलाई 2008 ई अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 15 अप्रैल 2011 ई)

मर्दों को चाहिए कि शान्ति वाली पारिवारिक ज़िन्दगी के लिए अपने छोटे छोटे काम ख़ुद भी कर लिया करें। सय्यदना हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं।

" कई बार ऐसी शिकायतें भी आती हैं कि एक व्यकित् घर में कुर्सी पर बैठा अख़बार पढ़ रहा है, प्यास लगी तो बीवी को आवाज़ दी कि फ़िरिज में से पानी या जूस निकाल कर मुझे पिला दो। हालाँकि क़रीब ही फिरज पड़ा हुआ है ख़ुद निकाल कर पी सकते हैं और अगर बीवी बेचारी अपने काम की वजह से या व्यस्तता के कारण से या किसी कारण से लेट हो गई तो फिर इस पर गरजना, बरसना शुरू कर दिया।"

(ख़ुत्बा जुमअ: 2 जुलाई 2004 ई)

अच्छी पारिवीरिक ज़िंदगी के लिए मर्दों को धैर्य से काम लेना बहुत ज़रूरी है। सय्यदना हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं।

"कई बार घरों में मियां बीवी की छोटी छोटी बातों पर तल्ख़-कलामी हो जाती है, तल्ख़ी हो जाती है। मर्द को अल्लाह तआला ने ज़्यादा मज़बूत और ताक़तवर बनाया है अगर मर्द ख़ामोश हो जाएगा तो शायद 80 प्रतिशत से अधिक झगड़े वहीं ख़त्म हो जाएं। केवल ज़ेहन में यह रखने की बात है कि मैंने हुस्ने सुलूक करना है और धैर्य से काम लेना है।"

(ख़ुत्बा जुमा 23 जनवरी 2004 ई)

अल्लाह तआला हमें इन आदेशों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

कुर्आन की दृष्टि में उत्तम पारिवारिक जीवन

तक़रीर इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्ला भारत 2022 ई

(एच शम्सुद्दीन ,क़ायद तरबियत मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

सम्मान योग्य सदर जलसा और मुअज़्ज़िज़ सामईन!

विनीत की तक़रीर का विषय है :। "ख़ुशगवार आइली ज़िन्दगी और क़ुरआन करीम"

हर इन्सान की हमेशा यह इच्छा होती है कि इस की ज़िन्दगी सुकून से गुज़रे। और इस की ज़िंदगी का हर क्षण ख़ुशीयों से भरपूर हो। इस्लाम ने इस सम्बन्ध से एक प्यारी दुआ सिखाई है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"निकाह से एक अन्य ग़रज़ भी है जिसकी तरफ़ क़ुरआन करीम में अर्थात सूरत अल-फ़ुर्कान में इशारा है और वह यह है وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا (अल-फ़ुर्कान 70) अर्थात मोमिन वे हैं जो ये दुआ करते हैं कि हे हमारे ख़ुदा हमें अपनी बीवियों के बारे में और बेटों के बारे में दिल की ठंडक प्रदान कर और ऐसा कर कि हमारी बीवियां और हमारे बेटे नेक क़िस्मत हों और हम उनके सम्मुख हों। "

(आर्या धर्म रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 10 पृष्ठ 23)

इसी तरह उस को हासिल करने की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

"मेरी अपनी तो यह हालत है कि मेरी कोई नमाज़ ऐसी नहीं है जिसमें मैं अपने दोस्तों और औलाद और बीवी के लिए दुआ नहीं करता।"

(अल-हकम भाग 5 नम्बर 35 दिनांक 24 सि-तम्बर 1901 ई)

सुखद पारिवारिक ज़िन्दगी को बरक़रार रखने के लिए दुआ के इलावा मियां बीवी के अख़लाक़ का भी बहुत बड़ा हाथ है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम फ़रमाते हैं "चाहिए कि बीवियों से पतियों का ऐसा सम्बन्ध हो जैसे दो सच्चे और हक़ीक़ी दोस्तों का होता है। "

(मलफ़ूज़ात भाग 3 अलबदर 22 मई 1903 ई)

फिर फ़रमाते हैं ।

" यह मत समझो कि फिर औरतें ऐसी चीज़ें हैं कि उनको बहुत अपमानित और हीन क़रार दिया जाओए। नहीं। नहीं। हमारे हादी कामिल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से बेहतर वह शख़्स है जिसका अपने अहल के साथ उत्तम सुलूक हो। बीवी के साथ जिसका उम्दा चाल चलन है और व्यवहार अच्छा नहीं वह नेक कहाँ ? दूसरों के साथ वह नेकी और भलाई तब कर सकता है जब वह अपनी बीवी के साथ उम्दा सुलूक करता हो और उम्दा व्यवहार रखता हो।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 403 संस्करण 2003 ई)

इस सिलसिला में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उत्तम नमूना प्रत्येक मोमिन के लिए मार्ग दर्शन है। आईए इस सुन्दर ज़िन्दगी के कुछ उदाहरण सुनें।

हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाया करती थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कोई कठोर शब्द अपनी ज़बान पर न लाए। इसी तरह फ़रमाती हैं कि आप तमाम लोगों से ज़्यादा

नर्म आदत वाले थे और सबसे ज़्यादा उपकार करने वाले। साधारण आदमियों की तरह बिना सन्कोच के घर में रहने वाले, आप ने मुँह पर कभी तेवरी नहीं चढ़ाई हमेशा मुस्कुराते ही रहते थे। अपनी सारी ज़िंदगी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने किसी ख़ादिम या बीवी पर हाथ नहीं उठाया।

(शमाइल अत्तिर्मिज़ी बाब फ़ी ख़लक़ अल्लाह)

एक दिन हज़रत आयशा रज़ि आंहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ तेज़ तेज़ बोल रही थीं कि ऊपर से उनके अब्बा, हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह तशरीफ़ लाए। यह हालत देख कर उन से रहा न गया और अपनी बेटी को मारने के लिए आगे बढ़े कि तू ख़ुदा के रसूल के आगे इस तरह बोलती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह देखते ही बाप और बेटी के बीच आ गए और हज़रत अबूबकर रज़ि की मिलने वाली सज़ा से हज़रत आइशा रज़ि को बचा लिया। जब हज़रत अबूबकर रज़ि चले गए तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ि से मज़ाक़ करते हुए फ़रमाया। देखा आज हमने तुम्हें तुम्हारे अब्बा से कैसे बचाया?

(अबू दाऊद किताबुल अदब)

आं हज़रत रज़ि हज़रत आयशा रज़ि के बहुत नाज़ उठाते थे। एक बार उनसे फ़रमाने लगे कि आयशा मैं तुम्हारी नाराज़गी और ख़ुशी को ख़ूब पह-चानता हूँ। हज़रत आईशा रज़ि ने निवेदन किया वह कैसे? फ़रमाया जब तुम मुझसे ख़ुश होती हो तो अपनी गुफ़्तगु में रब मुहम्मद कह कर क़स्म खाती हो और जब नाराज़ होती हो तो रब इब्राहीम कह कर बात करती हो। हज़रत आयशा रज़ि कहती हैं कि हाँ हे अल्लाह के रूसल यह तो ठीक है मगर बस मैं सिर्फ ज़बान से ही आप का नाम छोड़ती हूँ (दिल से तो आप की मुहब्बत नहीं जा सकती।)

(बुख़ारी किताबुन्निकाह)

इसी तरह आपके ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पारिवारिक ज़िन्दगी भी अपने आक़ा की ही सम्पूर्ण तस्वीर है। इस तारीख़ की भी ज़रा वर्क़ गरदानी करते हैं। हुज़ूर अलैहिस्स-लाम फ़रमाते हैं

" मेरा यह हाल है कि एक बार मैंने अपनी बीवी पर आवाज़ा कसी था और मैं महसूस करता था कि वो आवाज़ बुलंद दल के दुख से मिली हुई है और इस के अतिरिक्त कोई दिल दुखाने वाली और कठोर बात मुँह से नहीं निकाली था। इस के बाद मैं बहुत देर तक इस्तिग़फ़ार करता रहा और बड़े विनय से से नफ़िलें पढ़ीं और कुछ सदक़ा भी दिया कि यह कठोरता पत्नी पर किसी छुपे हुए इलाही गुनाह का नतीजा है"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 307)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" इस ज़माने में ...औरत के बारे में हुक्मों पर अमल करने में कमी आ गई है इस लिए कामिल आशिक़ सादिक़ और ज़माने के इमाम को अल्लाह तआला ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया। फ़रमाया कि अपनी जमाअत में औरतों के हुक़ूक़ क़ायम करवाओ, इस नाज़ुक ज़ात को जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शीशे से समानता दी है जिसके साथ सख़्ती उसे किरची किरची कर सकती है, टुकड़े टुकड़े कर सकती है। जिसके जिस्म की बनावट नाज़ुक है जिसकी भावनाओं को भी ख़ुदा तआला ने ऐसा बनाया है कि नर्मी और प्रेम से पेश आना चाहिए। यह पसली की हड्डी से समतुल्य

है इस के मूल रूप से ही फ़ायदा उठाओ। अत: आपको जब ऐसे इमाम की जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली है जिसको इस ज़माने में फिर सीधा आपके हुक़ूक़ क़ायम करवाने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया फिर आपको किस क़दर उस ख़ुदा का शुक्रगुज़ार होते हुए उस के आदेशों पर अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए जो हमारे पैदा करने वाले ने हमें दिए हैं।"

(जलसा सालाना यूके ख़िताब मस्तूरात 29 जुलाई 2006 प्रकाशन अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 26 जून 2015 ई)

सुन्दर पारिवारिक ज़िन्दगी के नतीजा में हमारे घर का माहौल ऐसा जन्नत तुल्य हो जैसा कि हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि फ़रमाती हैं

तुम्हारी सुबह हो हसीन, रुख़-ए-सह्र की तरह
तुम्हारी रात हो मुनव्वर ,शब क़मर की तरह
कोई पूछे बहिश्त का ,तो कह सको
हंसकर कि वो ख़्वाब जगह है ,हमारे घर की तरह

अल्लाह तआला हम सबको हक़ीक़ी ख़ुशगवार ज़िंदगी प्रदान फरमाए। आमीन

एक ज़रूरी तालीम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"और तुम्हारे लिए एक ज़रूरी तालीम यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को परित्यक्त की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में ज़िन्दगी है जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे जो लोग हर एक हदीस और हर एक कथन पर क़ुरआन को मुक़द्दम रखेंगे उनको आसमान पर मुक़द्दम रखा जाएगा। मानव जाति के लिए समस्त धरती पर अब कोई किताब नहीं परन्तु क़ुरआन।"

(किश्ती नूह ,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 15)

क़ुरआन और साईंस

इस्लाम की बुनियादी किताब क़ुरआन है। इस में कई स्थानों पर "कद अफलह तअकलून" कह कर अक़ल को इस्तिमाल करके कोई नतीजा निकालने की नसीहत की गई है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ۔ (آل عمران:191) क़ुरआन की इस आयत में एक स्थान पर साईंस के बारे में फरमाते हैं

" जब बुद्धिमान और अक़्ल वाले इन्सान ज़मीन और आसमान के ग्रहों की बनावट में ग़ौर करते और रात और दिन की कमी बेशी के कारणों को गहरी नज़र से देखते हैं उन्हें इस प्रणाली पर नज़र डालने से ख़ुदा तआला के वजूद पर दलील मिलती है। अत: वे ज़्यादा इन्किशाफ़ के लिए ख़ुदा से मदद चाहते हैं और इस को खड़े हो कर और बैठ कर और करवट पर लेट कर याद करते हैं जिससे उनकी अक़्लें बहुत साफ़ हो जाती हैं। अत: जब वे इन अक़्लों के माध्यमों से आकाशीय ग्रहों और ज़मीन की उत्तम तथा बेहतरीन बनावट में फ़िक्र करते हैं। तो अपने आप बोल उठते हैं कि ऐसा निज़ाम उत्तम और सुदृढ़ प्रणानी हरगिज़ झूठी और व्यर्थ नहीं बल्कि सच्चे सृष्टा का चेहरा दिखला रहा है। अत: वे अल्लाह तआला की हस्ती का इक़रार के यह मुनाजात करते हैं हे मेरे अल्लाह ती इस से पवित्र है कि कोई तेरे वजूद से इन्कार कर के नालायक़ गुणों से तुझे सम्बन्धित करे। अत: ती हमें दोज़ख़ की आग से बचा। अर्थात तुझसे इन्कार करना दोज़ख़ स्वरूप है। और समस्त आराम और राहत तुझ में और तेरी शनाख़्त में है। जो शख़्स कि तेरी सच्ची शनाख़्त से वंचित रहा वह वास्तम में इसी दुनिया में आग में है।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी)